

आदिवासी युवाओं में निराशा और उनके मनो-सामाजिक समायोजन के संबंध

1. ज्योति सिंह- रिसर्च स्कॉलर , कलिंगा यूनिवर्सिटी, नया रायपुर (छ .ग)
2. डॉ.श्रद्धा वर्मा – एसोसिएट प्रोफेसर एवं शोध मार्गदर्शक, कलिंगा यूनिवर्सिटी, नया रायपुर (छ .ग) [Email- shraddha.verma@kalingauniversity.ac.in](mailto:shraddha.verma@kalingauniversity.ac.in)

सारांश:

आधुनिक युग में तनाव एक सार्वभौमिक घटना बन गया है। अबोल ने बताया कि हर व्यक्ति सुख प्राप्त के लिए अधिक से अधिक चाहता है, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और यह प्रतिस्पर्धा तनाव उत्पन्न करती है। कोई संदेह नहीं कि प्रतिस्पर्धा आवश्यक है, लेकिन इसके परिणामों की अनदेखी नहीं की जा सकती।

निराशा एक ऐसी स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होता है। यह भावना तब प्रकट होती है जब किसी इनाम की समाप्ति होती है, जिससे भावनात्मक प्रतिक्रिया होती है जो हस्तक्षेप करने वाले उत्तर को प्रेरित करती है। जीवन में अर्थ की भावना भी यह निर्धारित कर सकती है कि निराशा हमें किस हद तक प्रभावित करती है।

परिचय:

आधुनिक युग विज्ञान और तकनीक का युग है, जहां हर कोई अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में, महिलाएँ भी कई क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। परंपरागत रूप से, महिलाओं की भूमिका घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थी, लेकिन अब वे विभिन्न कार्यक्षेत्रों में योगदान दे रही हैं।

उद्देश्य:

1. अनुसूचित जाति की छात्राओं के बीच उच्च और निम्न बुद्धिमत्ता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस) और समायोजन के स्तरों के अनुसार निराशा में अंतर का अध्ययन करना।

2. बुद्धिमत्ता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति, बुद्धिमत्ता और समायोजन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समायोजन के बीच अंतःक्रियाओं का अध्ययन करना, जब निराशा आश्रित चर (डिपेंडेंट वेरिएबल) के रूप में हो।

परिकल्पनाएँ:

1. उच्च और निम्न बुद्धिमत्ता वाले छात्रों के बीच निराशा के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
2. उच्च और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले छात्रों के बीच निराशा के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
3. उच्च और निम्न समायोजन स्तर वाले छात्रों के बीच निराशा के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
4. बुद्धिमत्ता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समायोजन के अंतःक्रियात्मक प्रभावों का निराशा पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं होगा।

निराशा की परिभाषा:

निराशा को एक मनोवैज्ञानिक अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है जो लक्ष्य-निर्देशित गतिविधि में बाधा डालने के कारण उत्पन्न होती है (किस्कर, 1964)। इसे अवरोधन (थ्वार्टिंग) के रूप में भी देखा जाता है जो किसी आवश्यक इच्छा को पूरा करने से रोकता है (कोलमैन, 1974)।

निराशा-आक्रोश परिकल्पना (फ्रस्ट्रेशन-एग्रेसन हाइपोथीसिस) यह मानती है कि आक्रोश हमेशा निराशा का परिणाम होता है। हालाँकि, यह आवश्यक नहीं कि हर बार निराशा आक्रोश को जन्म दे।

बुद्धिमत्ता की प्रकृति:

बुद्धिमत्ता को विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया गया है:

1. अमूर्त बुद्धिमत्ता (एब्सट्रैक्ट इंटेलिजेंस) - संख्याओं और शब्दों को समझने और उनका उपयोग करने की क्षमता।

2. मूर्त बुद्धिमत्ता (कंक्रीट इंटेलिजेंस) - भौतिक चीजों को समझने और उनसे व्यवहार करने की योग्यता।
3. सामाजिक बुद्धिमत्ता (सोशल इंटेलिजेंस) - सामाजिक परिस्थितियों को समझने और उनके साथ समायोजित होने की क्षमता।

समायोजन का अर्थ:

समायोजन की प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से ही शुरू हो जाती है और जीवन भर चलती रहती है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की समस्याओं से जुड़ा होता है। समायोजन जैविक, सांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों से देखा जाता है।

अध्ययन की प्रासंगिकता:

इस अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी युवाओं के विभिन्न मानसिक और सामाजिक कारकों को समझना है, जिससे वे अपने समाज में बेहतर रूप से समायोजित हो सकें। निराशा, बुद्धिमत्ता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समायोजन के बीच के संबंधों को समझने से यह स्पष्ट होता है कि कैसे विभिन्न कारक आदिवासी युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक समायोजन को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष:

1. उच्च बुद्धिमत्ता वाले आदिवासी छात्र कम निराश होते हैं, जबकि निम्न बुद्धिमत्ता वाले छात्र अधिक निराशा का अनुभव करते हैं।
2. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले छात्र कम निराशा महसूस करते हैं, जबकि निम्न एसईएस वाले अधिक निराश होते हैं।
3. समायोजन का स्तर भी निराशा को प्रभावित करता है; उच्च समायोजन वाले छात्र कम निराश होते हैं।
4. बुद्धिमत्ता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण पारस्परिक प्रभाव नहीं पाया गया।

सुझाव:

1. मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के लिए स्कूलों में परामर्श कार्यक्रम लागू किए जाने चाहिए।
2. सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को विशेष प्रयास करने चाहिए।
3. शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए समावेशी नीतियाँ अपनाई जानी चाहिए।

यह अध्ययन आदिवासी युवाओं की मानसिक स्थिति को समझने में मदद करता है और उनके बेहतर विकास के लिए आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता पर बल देता है।

संदर्भ सूची:

1. श्रीवास्तव, पी.के. (1980)। "निराशा और शिक्षण दक्षता के बीच संबंध" (अप्रकाशित पीएचडी थीसिस)।
2. सुनीता, वाई. (1991)। "जीवन-संतोष और आत्मस्वीकृति के संदर्भ में निराशा की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन" (अप्रकाशित पीएचडी थीसिस)।
3. साइमंड्स, पी.एम. (1939)। "माता-पिता और बालक के संबंधों का मनोविज्ञान"।
4. थॉम्पसन, जी. (1968)। "बाल मनोविज्ञान"। बॉम्बे: टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस।
5. वर्मा, एम. (1968)। "शैक्षिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का परिचय"। एशिया पब्लिशिंग हाउस।